वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रकाशित

बुधवार, भाद्रपद कृष्ण पक्ष नवमी, कलियुग वर्ष ५१२२ (१२ अगस्त, २०२०)

वैदिक उपासना

राष्ट्र एवं धर्मके पुनरूत्थान हेतु समर्पित ऑनलाइन दैनिक वृत्त पत्र

धर्माचरण हेतु कष्ट उठाना, राष्ट्र हेतु समय देना एवं साधना हेतु त्याग करना, यह सनातन उपासना है ।

e-mail : upasanawsp@gmail.com, website : www.vedicupasanapeeth.org

कलका पंचांग

जयतु जयतु हिन्दुराष्ट्रं

१३ अगस्त २०२० का वैदिक पंचांग

कलियुग वर्ष-५१२२, विक्रम संवत-२०७७, शकवर्ष -१९४२.....कलके पंचांगके सम्बन्धमें और जानकारी हेतु इस लिंकपर जाएं. https://vedicupasanapeeth.org/hn/kal-ka-panchang-13082020

देव स्तुति

यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया ।

युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम्॥

अर्थ : जो गोपगण और नन्दजीके सहित अति प्रसन्न यशोदाजीसे युक्त हैं और एकमात्र आनन्ददायक हैं, उन गोपनायक गोपालको नमस्कार करता हूं।

शास्त्र वचन

नवनि नीच कै अति खदाई । जिमि अंकुश धनु उरग बिलाई ॥

भयदायक खल कै प्रिय बानी । जिमि अकालके कुसुम भवानी ॥

अर्थ : नीचका झुकना (नम्रता) भी दुखदायी होता है । जैसे अंकुश, धनुष, सांप और बिल्लीका झुकना । हे भवानी ! दुष्टकी मीठी वाणी भी उसी प्रकार भय देनेवाली होती है, जैसे बिना ऋतुके पुष्प ।

पृष्ठ क्र. १

सोचिअ गृही जो मोह बस। करइ करम पथ त्याग।
सोचिअ जती प्रपंच रत। बिगत बिबेक बिराग॥

अर्थ : उस गृहस्थको चिन्तन करना चाहिए, जो मोहवश कर्म-मार्गका त्याग कर देता है; उस संन्यासीको चिन्तन करना चाहिए, जो सांसारिक प्रपञ्चोंमें फंसा हुआ है और ज्ञान वैराग्यसे विहीन है।

****

धर्मधारा

१. एक बार गोपियोंने बांसुरीसे पूछा, "अरी बांसुरी ! तू श्रीकृष्णके होठोंसे कैसे चिपक गई ?" बांसुरीने कहा, "क्या बताऊं बहना, मैं तो बांसोंके झुण्डमें चुपचाप 'कृष्ण-कृष्ण' रटा करती थी, एक दिन उनकी दृष्टि मुझपर पड गई, बस उसके पश्चात क्या बताऊं ?, सर्वप्रथम तो उस 'छलिये'ने मुझे मेरे कुटुम्बसे दूर कर दिया, तत्पश्चात मुझे काटा और छांटा, पीडा तो बहुत हो रही थी; परन्तु मैं 'कृष्ण-कृष्ण' करती रही। उनका मन इतना सताकर भी न भरा तो मेरे भीतर जो भी था, वह सब निकाल बाहर फेंका और तब भी मैं 'प्रेमदीवानी' 'कृष्ण-कृष्ण' करती रही, तब उस 'चित्तचोर'ने मेरे अंगमें छह छेद कर दिए। मैं पगली तब भी 'कृष्ण–कृष्ण' करती रही, अन्तमें कृष्णने कहा, "तू जीती, मैं हारा, अब तू सदा मेरे होठोंपर विराजमान रहेगी !""

****

२. साधनाके अवरोधक (भाग-४)

कुतर्क

वर्तमान कालमें यह दुर्गुण अनेक साधकोंमें देखनेको मिलता है। तर्क और कुतर्कमें अन्तर होता है। जिसकी बुद्धि तीक्ष्ण हो, जिसने शास्त्रोंका अभ्यासकर साधना की होती है, वे ही तर्क करनेके अधिकारी होते हैं। साम्प्रत कालमें वृत्तिसे तमोगुणी एवं अहंकारी व्यक्ति बिना ज्ञानके कुतर्क करनेमें सबसे आगे रहता है। यही उसके लिए सबसे बडा अवरोधक सिद्ध होता है। इससे उन्हें किसी भी सन्तकी कृपा नहीं मिलती है। उसे अपने ज्ञानका बहुत अधिक अहंकार होता है। उसे इस बातका भी भान नहीं होता है कि इससे उसकी ही हानि हो रही है एवं इससे उसे कोई भी ज्ञान नहीं देगा एवं यहांतक कि उन्हें ईश्वर भी कुछ नहीं सिखानेवाले हैं; अतः साधकोंको सिखानेकी नहीं; अपितु सीखनेकी वृत्ति आत्मसात करनी चाहिए एवं कुतर्कसे बचना चाहिए, इससे शक्तिका भी क्षय नहीं होता है, जिसका सदुपयोग साधना हेतु किया जा सकता है।

****

३. हिन्दू धर्मके आधार ग्रन्थ (भाग-३)

पुराण

पुराण चार प्रकारके है :

(१) महापुराण (२) पुराण (३) अतिपुराण (४) उपपुराण। इनमेंसे प्रत्येककी संख्या अठारह बताई जाती है। सर्वसाधारणमें महापुराणोंको ही पुराणके नामसे जाना जाता है।

इनमें महापुराणोंके नाम निम्न हैं :

१. ब्रह्मपुराण २. पद्मपुराण ३. विष्णुपुराण ४. शिवपुराण / वायुपुराण ५. श्रीमद्भागवत, ६. नारदीयपुराण ७. मार्कण्डेयपुराण ८. अग्निपुराण ९. भविष्यपुराण १०. ब्रह्मवैवर्तपुराण ११. लिङ्गपुराण १२. वराहपुराण १३. स्कन्दपुराण १४. वामनपुराण १५. कूर्मपुराण १६. मत्स्यपुराण १७. गरुडपुराण और १८. ब्रह्माण्डपुराण। पुराणोंमें वेदोंके सभी पूर्वोक्त विषय विस्तारसे प्रतिपादित किए गए हैं।

दर्शन :

'दृश्यते यथार्थतया वस्तु पदार्थज्ञानमिति दर्शनम्'के अनुसार : 'तत्त्व-ज्ञानसाधक' शास्त्रोंका नाम दर्शन-शास्त्र है। सृष्टि तथा जीवके जन्म-मरणके कारण तथा गतिपर जो शास्त्र विचार करे, उसे दर्शन कहते हैं।

मुख्य दर्शन छह हैं :

१. वैशेषिक २. सांख्य ३. योग ४. न्याय ५. पूर्वमीमांसा और ६. उत्तरमीमांसा। इनमेंसे प्रत्येकके कई भेद आचार्योंके मतोंके कारण हो गए हैं। इनमेंसे सांख्यदर्शनके मूल सूत्र-ग्रन्थपर सन्देह किया जाता है। उसकी 'कारिका' ही मुख्य है। उत्तरमीमांसादर्शनके (ब्रह्मसूत्रके) भाष्यके रूपमें ही वैदिक सम्प्रदाय बने हैं। इस प्रकार इनमेंसे प्रत्येक दर्शनपर भाष्य, टीका एवं विवेचनके तो सहस्रों ग्रन्थ हैं ही, स्वतन्त्र ग्रन्थ भी कई सहस्र हैं।

स्मृति :

हिन्दू धर्म तथा हिन्दू समाजका मुख्य संचालन स्मृतियोंके द्वारा ही होता है। स्मृतियोंमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष; चारों पुरुषार्थोंका विवेचन है। इनमें वर्ण-व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, वर्णाश्रम-धर्म, विशेष अवसरोंके कर्म, प्रायश्चित, शासन-विधान, दण्ड-व्यवस्था तथा मोक्षके साधनोंका वर्णन है।

कृष्णयजुर्वेदके : तैत्तिरीय-ब्राह्मण तथा तैत्तिरीय-संहिताका मध्यवर्ती ब्राह्मण।

शुक्लयजुर्वेदका : शतपथ-ब्राह्मण (यह भी दो प्रकारका है : काण्वशाखावाला १७ काण्डोंका है और माध्यन्दिन शाखाका १४ काण्डोंका है)।

सामवेदके : ताण्ड्य (पञ्चविंश) ब्राह्मण २. षड्विंश ब्राह्मण ३. सामविधान-ब्राह्मण ४. आर्षेय-ब्राह्मण ५. मन्त्रब्राह्मण ६. दैवताध्याय-ब्राह्मण ७. वंशब्राह्मण ८. संहितोपनिषद्-ब्राह्मण ९. जैमिनीय-ब्राह्मण और १०. जैमिनीय-उपनिषद्-ब्राह्मण। अथर्ववेदका : गोपथब्राह्मण। **- पू. तनुजा ठाकुर, सम्पादक**

घरका वैद्य (रस चिकित्सा, भाग-२)

रस-चिकित्साके लाभ

* रस-चिकित्सासे अनेक रोगोंका प्रतिकार किया जा सकता है।

* कोई भी रोग होनेपर अशक्तता (कमजोरी) बढ जाती है, जिसमें भोजन सरलतासे खाया या पचाया नहीं जा सकता है, ऐसेमें हम रस चिकित्साको सरलतासे उपयोगमें ला सकते हैं, जिससे शारीरिक व मानसिक अशक्तताको दूर किया जा सकता है।

* जिन खाद्य पदार्थोंसे रस निकाले जाते हैं, उन्हें उगाने हेतु किसी भी प्रकारके अधिक उर्वरककी (खादकी) आवश्यकता नहीं होती है। इस कारण इनकी गिनती जैविक खाद्य पदार्थोंमें (आर्गेनिक फूडमें)

होती है। इनके जैविक होनेसे इनके रस अधिक पौष्टिक होते हैं।
* रसाहारसे, 'फास्टफूड' तथा दूषित भोजनसे होनेवाले दोष नष्ट हो जाते हैं।
* रसाहारसे जलकी न्यूनता (कमी) भी पूरी होती है तथा दूषित जलसे होनेवाले सभी रोगोंसे बचा भी जा सकता है।
* रसाहारसे रक्त (लहू) स्वच्छ होता है, मूत्र अधिक होकर शरीरके विषाक्त तत्त्व बाहर निकलते हैं। रससे शरीरकी क्षतिग्रस्त कोशिकाओंको पुनर्निर्माणमें सहायता मिलती है।
* फल या तरकारीका रस पीनेसे पाचन तन्त्रपर अधिक बल नहीं पडता और अधिकसे अधिक पोषक तत्त्वोंकी प्राप्ति होती है।
रस पीते समय ध्यान रखने योग्य तथ्य :
* जब भी हम कोई पेय पीते हैं, हमें उसे धीरे-धीरे, मुखमें कुछ क्षण लारसे मिश्रितकर पीना चाहिए। यहांतक कि जल भी हमें धीरे-धीरे या घूंट-घूंट लेकर ही पीना चाहिए। इस प्रकार पीनेसे हमारे मुखमें उत्पन्न होनेवाली उष्णता भी शान्त हो जाती है तथा ये ठण्डक हमारे उदरतक (पेटतक) पहुंचती है। ऐसा करनेसे रक्त अधिक बननेकी क्षमता उत्पन्न होती है तथा रक्त संचार भी ठीकसे होता है।
* रसाहारसे पहले फल तथा तरकारियोंके गुण-दोष अवश्य समझना चाहिए। यह देखना चाहिए कि क्या वह फल या तरकारी हमारे लिए अनुकूल है अथवा नहीं ? और दोनोंके रसको पृथक-पृथक ही पिएं !
* रसको निकालनेके पश्चात उसे त्वरित पीना चाहिए। यदि आवश्यकता पडनेपर रसको रखना पडे तो ३५ से ३८ 'डिग्री फारेनहाइट' तापमानपर रखें ! इसे 'कांच'के गहरे रंगकी बोतलमें रखें, जो उबलते पानीसे स्वच्छ की गई हो, इसका विशेष ध्यान रखें !
* रस आवश्यकतासे अधिक कभी नहीं लेना चाहिए। ऐसा इसलिए; क्योंकि अधिकांश रस अधिक अम्लीय होते हैं, जो शरीरकी प्राकृतिक अम्लताको बिगाड देते हैं।
* बिना किसी रोगके भी १-२ 'गिलास' फल या तरकारीका रस प्रतिदिन पीना चाहिए।
* आरम्भमें रसाहारकी मात्रा अल्प रखें, धीरे-धीरे मात्रा बढाएं।
* प्रातः रसाहार करनेकी प्रक्रियामें रोगी निरन्तरता रखे तो उसके कष्ट शीघ्र न्यून हो जाएंगे।
* रसाहारके रूपमें केवल फलों, तरकारियों और गेहूंके जवारेका ही उपयोग प्रचलित है, अन्य सभी वनौषधियोंके रसोंको आयुर्वेदके अन्तर्गत माना गया है।
* सामान्यतः गेहूंके जवारे, गिलोय, ग्वारपाठा, शीशम, पीपल, अदरक, कडवी नीम, मीठी नीम, बेलपत्र, अडूसा, अपामार्ग, गेंदेके फूल या पौधेकी पत्तियां, हरसिंगार, पुदीना, पान, अगिया, पर्णबीज, मुलैठी, हलदी, आंवला, मकोय, सहजन, मेथी, मूली, पालक, टमाटर, मेथा, गुडमार, तुलसी, निर्गुण्डी, अमलतास, हडजोड, जामुन आदिका रसाहार चिकित्सा पद्धतिमें प्रयोग होता है।
* सामान्यतः जो पेड-पौधे जिस ऋतुमें सरलतासे उपलब्ध होते हैं, उसी ऋतुमें मानव शरीरको उसकी आवश्यकता होती है; इसलिए जबतक ऋतु अनुकूल फल मिलें, तबतक उसका सेवन करें। उसके पश्चात उनके चूर्णका उपयोग करना चाहिए।
* शीतऋतु (सर्दी) आते ही आंवलेका उपयोग आरम्भ हो जाता है। कार्तिक माहसे कच्ची हलदीका उपयोग होता है। इसका उपयोग वसन्त पंचमी या होलीतक होता है। भुई आंवला (भूमि आंवला) वर्षा ऋतुमें आता है। ग्वारपाठा, गेहूंके जवारे, नारियल-पानी आदिका प्रयोग सम्पूर्ण वर्ष होता है।

प्रेरक प्रसंग

पवित्र विचार व ईश्वरीय कृपा

एक समय दो साधक एक साथ रहते थे। दोनोंकी भक्तिका मार्ग भिन्न-भिन्न था। एक साधक दिनभर तपस्या और मन्त्रजप करते रहते थे, जबकि दूसरे साधक प्रतिदिन सवेरे-सायं पहले भगवानको भोग लगाते, तदुपरान्त स्वयं भोजन करते थे।

एक दिन दोनोंके मध्य विवाद छिड गया कि बडा सन्त कौन है ? इसी मध्य वहां देवर्षि नारद पहुंच गए। नारदने दोनों साधकसे पूछा कि किस बातके लिए विवाद हो रहा है ? साधकने बताया कि हम यह निश्चय नहीं कर पा रहे हैं कि दोनोंमें बडा साधक कौन है ? नारदने कहा कि ये तो छोटीसी बात है, इसका निर्णय मैं कल कर दूंगा।

अगले दिवस देवर्षि नारदने मन्दिरमें दोनों साधकोंके स्थानके पास हीरेकी एक-एक अंगूठी रख दी। पहले तप करनेवाला साधक वहां पहुंचा। उसने एक अंगूठी देखी और चुपचाप उसे अपने आसनके नीचे छुपाकर मन्त्रजप करने लगा।

कुछ समय पश्चात दूसरा साधक भगवानको भोग लगाने पहुंचा। उसने भी हीरेकी अंगूठी देखी; परन्तु उसने अंगूठीकी ओर ध्यान नहीं दिया। भगवानको भोग लगाया और भोजन करने लगा। उसने अंगूठी नहीं उठाई, उसके मनमें लोभ नहीं जागा; क्योंकि उसे विश्वास था कि भगवान प्रतिदिन उसके लिए भोजनकी व्यवस्था अवश्य करेंगे।

कुछ समय पश्चात वहां नारदजी आ गए। दोनों साधकोंने पूछा कि अब आप बताएं कि हम दोनोंमें बडा सन्त कौन है ? नारदने तपस्या करनेवाले साधकको खडे होनेके लिए कहा। जैसे ही वह साधक खडा हुआ तो उसके आसनके नीचे छुपी हुई अंगूठी दिख गई।

नारदजीने उससे कहा कि तुम दोनोंमें भोग लगाकर भोजन ग्रहण करनेवाला साधक बडा है। तपस्या करनेवाले सन्तमें चोरी करनेकी बुरी वृति है, उसने अपनी साधना करते समयमें भी चोरी करनेसे संकोच नहीं किया, जबकि भोग लगानेवाले साधकने अंगूठीकी ओर ध्यानतक नहीं दिया। इस कारण वही साधक बडा है। इस प्रसंगकी सीख यह है कि साधकमें यह काम, क्रोध लोभ जैसे दुर्गुण हों तो वह कभी साधनाके मार्गसे गिर सकता है; इसलिए दोष निर्मूलन प्रक्रियाको गम्भीरतासे करना चाहिए।

उत्तिष्ठ कौन्तेय

दुपहिया वाहनके दुष्कर्मी चालकको पुलिसने चोटिलकर बनाया बन्दी

उत्तरप्रदेशकी पुलिसने दो अपराधियोंको गोली मारकर चोटिल किया और बन्दी बनाया। उनके नाम नदीम और इमरान हैं। वे दोनों अपने तिपहिया वाहनसे, एक युवतीको, दुष्कर्म करने हेतु किसी निर्जन स्थानपर ले जानेका प्रयास कर रहे थे। हाथरसकी निवासी युवतीने कार्य समाप्तिके पश्चात घर जानेके लिए नोएडामें रिक्शा वाहन लिया। इस वाहनमें पहलेसे ही एक युवक बैठा हुआ था। युवतीको आभास हुआ कि चालक उसे किसी अन्य दिशामें ले जा रहा है। विरोध करनेपर दोनोंने उसके हाथ-पैर बांध दिए और दुष्कर्म किया। मार्गमें पुलिसद्वारा उस वाहनको रुकनेका संकेत मिलनेपर भी नहीं रुका।

पृष्ठ क्र. ५

युवतीके चिल्लानेपर पुलिसने उनका पीछा किया । दोषी अपने आपको घिरा हुआ जानकर चिल्लाए कि "मारो सालोंको, पुलिसवाले हैं।" दोनोंने गोलियां चलाईं तो पुलिसने भी गोली चलाई और भागनेके प्रयत्नमें दोनोंको पांवपर गोली लगी। दोनोंको बन्दी बना लिया गया है। उनपर अवैध शस्त्र रखने तथा हत्याके प्रयासका प्रकरण प्रविष्ट कर दिया गया है।

जिहादी किसी प्रकार भी हिन्दुओंको नष्ट करनेके प्रयास करनेमें लगे हुए हैं। ऐसे लोगोंसे दूर रहना चाहिए । बन्दी बनाए गए जिहादी अपराधियोंको कडा दण्ड मिलना चाहिए । (११.०८.२०२०)

****

भुजके न्यायाधीशके आदेशपर ध्वनि प्रसार यन्त्रपर लगाया गया प्रतिबन्ध

गुजरातके भुजमें शिव मन्दिरोंको पावन माहमें ध्वनिप्रसारक यन्त्र चलानेसे न्यायाधीशने मना किया है । शिव मन्दिरोंके प्रतिनिधियोंने भुज प्रशासनको एक पत्र लिखा था । इस पत्रमें प्रतिनिधियोंने २० जुलाईसे २० अगस्ततक, एक निश्चित समयके लिए प्रातः एवं सायं, धार्मिक कृतियोंके लिए 'लाउडस्पीकर' चलानेकी आज्ञा मांगी थी; किन्तु आज्ञा देनेके स्थानपर न्यायाधीशने मिथ्याहेतुसे (बहाना बनाकर) मना कर दिया। न्यायाधीशने लिखा कि भुजमें 'कोरोना' महामारीका सङ्क्रमण बहुत तीव्रतासेसे बढा है । 'माइक्रोफोन'से निकलनेवाली ध्वनि तरंगें सङ्क्रमणको फैला सकती हैं । इस प्रकार इस ध्वनि प्रसार यन्त्रकी ऊंची ध्वनिसे 'कोरोना' महामारी अधिक फैल सकती है।

न्यायाधीश न्याय दे तो उचित है; परन्तु यहां वे वैज्ञानिक बननेका प्रयास कर रहे हैं, यह हास्यास्पद भी है और दुखद भी ! यह वैज्ञानिकता 'बकरीद'के समय कहां चली जाती है ? क्या ऐसी न्यायव्यवस्था कभी उचित न्याय कर पाएगी ?; इसलिए धर्मराज्यकी स्थापना अत्यन्त आवश्यक है ! (११.०८.२०२०)

****

'आईएएस' अधिकारीसे नेता बने शाह फैसलकी राजनीतिको डेढ वर्षमें ही विराम, शेहला रशीदने भी छोडा साथ

'आईएएस' अधिकारीसे नेता बने शाह फैसलने राजनीतिसे संन्यास ले लिया है । जम्मू-कश्मीरमें उनकी राजनीति लगभग डेढ वर्ष चली। शाह फैसल प्रतिष्ठित परीक्षा उत्तीर्ण करनेवाले प्रथम कश्मीरी थे। २०१९ के आरम्भमें उन्होंने शासकीय चाकरीसे त्यागपत्र दे दिया था। उन्होंने मार्च २०१९ में 'जम्मू-कश्मीर पीपल्स मूवमेंट' नामक सङ्गठनका गठन किया। 'जेएनयू'की पूर्व छात्रा शेहला रशीद इस कार्यमें उनके साथ थी। गत वर्ष अक्टूबरमें शेहलाने राजनीतिसे संन्यास लेते हुए यह सङ्गठन भी छोड दिया। अब फैसलने भी 'जेकेपीएम'के अध्यक्ष पदसे त्यागपत्र दे दिया है। 'जेकेपीएम'के वरिष्ठ नेता फिरोज पीरजादाने इस बातकी पुष्टि की है। समाचार है कि शाह फैसल पुनः प्रशासनिक सेवामें आनेका इच्छुक है।

उल्लेखनीय है कि १४ अगस्तको शाह फैसलको देहलीमें नहीं रोका जाता तो वह 'इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस' भारतके विरुद्ध याचिका कर चुके होते। वे घाटीमें अनुच्छेद ३७० के हटानेके

प्रावधानके विरोधी हैं। ३७० हटाई जानेवाली है, उसे यह पहले ही ज्ञात हो चुका था तथा उनका मत था कि इससे कश्मीरी दुःखी होगा और सुरक्षा कम होते ही विरोधके स्वर मुखर होंगे। उसने इमरान खानका समर्थन करते हुए उसे शान्तिकी प्रक्रिया स्थापित करनेका इच्छुक बताया था तथा भारतमें कुछ लोग शान्ति नहीं चाहते, ऐसा देश विरोधी मत प्रदर्शित किया था।

ऐसे देशद्रोही विचारधारासे युक्त व्यक्तियोंको प्रशासनिक सेवामें आनेसे रोकना आवश्यक है। इनपर राष्ट्रद्रोहका अभियोग चलाकर दण्डित करना चाहिए !

****

गुलफिशाने कहा; देहली विश्वविद्यालयके प्राध्यापक अपूर्वानंदके निर्देश पर बनी थी उपद्रव हेतु बुर्केवाली महिलाओंकी सेना।

देहली उपद्रवके प्रकरणमें पुलिसद्वारा बन्दी बनाई गई गुलफिशाने पूछताछके मध्य बताया कि देहली विश्वविद्यालयके प्राध्यापक अपूर्वानंद भी इस उपद्रवमें सम्मिलित हैं। उसने कहा कि हिंसा भडकाने हेतु बुर्केवाली महिलाओंकी सेनाका निर्माण अपूर्वानंदके निर्देशों पर ही हुआ था। समाचार वाहिनी 'जी न्यूज'के प्रतिवेदनके अनुसार प्राध्यापक अपूर्वानंदने गुलफिशासे कहा था कि हिंसाके लिए वह तत्पर रहे तथा वही हिंसाके पश्चात उसकी प्रशंसा करते हुए कहा था कि यदि पुलिस तुम्हें बन्दी बनाए तो मेरा व 'पिंजरा तोड'के सदस्योंका नाम उजागर मत करना। प्राध्यापकने ही उपद्रव हेतु सन्देश भेजा था व पत्थर, बोतलें अम्ल व चाकू एकत्रित करने हेतु निर्देश दिया था। आरोपी गुलफिशाने भी स्वीकार किया कि देहली उपद्रवका मुख्य उद्देश्य भारत शासनकी छवि विश्वमें धूमिल करना था।

उपद्रवके षड्यन्त्रमें सम्मिलित हुए समस्त व्यक्तियोंको कठोर दण्ड प्रदान करना ही हिंसामें मारे गए हिन्दुओंको सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अतः अब न्यायालय भी निष्पक्ष होकर प्रकरणकी सुनवाई शीघ्र पूर्ण करें, यही सभी हिन्दुओंकी मांग है। (११.०८.२०)

****

९ वर्षकी बच्चीसे मदरसेके मौलवीने किया दुष्कर्म, अरबी पढाने आता था पीडिताके घर

रायपुरमें ९ वर्षकी बच्चीसे मदरसेके मौलवीने दुष्कर्म किया है। वह अरबी पढाने पीडिताके घर आता था। छत्तीसगढकी राजधानी रायपुरके एक मदरसेमें पढानेवाले २५ वर्षके मौलवीको ९ वर्षकी बच्चीके साथ बलात्कार करनेके आरोपमें पुलिस अभिरक्षामें (हिरासतमें) लिया गया है। समाचारोंके अनुसार घटना रविवार, ९ अगस्त २०२० की है। आरोपीका नाम मौलाना अरशद रहमानी है। मौलाना पिछले १५ दिनोंसे अरबी पढाने बच्चीके घर जा रहा था। रविवारके दिन उसने बच्चीको अकेला देखकर उसके साथ बलात्कार किया।

पृष्ठ क्र. ७

मदरसों एवं मौलानाके कृत्योंपर अब 'अवार्ड वापसी गैंग', वामपन्थी, कांग्रेस व कथित बुद्धिजीवियोंके मुखपर ताले लग गए हैं। एक भी शब्द किसीने इस सम्बन्धमें नहीं कहा ! ऐसे अपराधियोंको सार्वजनिक रूपसे मृत्युदण्ड दिया जाना चाहिए, सम्भवतः तभी इनमें भयका निर्माण होगा। (११.०८.२०२०)

****

मुंबईमें 'सीवर'के पास ७ घण्टे खडे होकर दिखाया मार्ग : दिखानेवाली पुष्प विक्रेता महिलोंको अधिकारियोंने कहे अपशब्द

भारी वर्षाके कारण मुंबईकी मार्गोंकी स्थिति ठीक नहीं है। ऐसेमें एक महिलाको मार्गके मध्यमें खडे होकर वाहनोंको दिशा दिखाते देखा गया। उस महिलाका नाम कांता मूर्ति है, जिनका 'वीडियो' भी 'सोशल मीडिया'पर प्रसारित हुआ।

'वीडियो'में देखा गया कि कैसे महिला खुले सीवरके पास खडे होकर लोगोंको उधर आनेसे रोक रही हैं और उन्हें दूसरी ओरसे जानेका सङ्केत कर रही हैं।

'एएनआई'के अनुसार, यह 'वीडियो' ४ अगस्तको मुंबईके माटुंगाके एक मार्गका है, जहां भारी वर्षाके कारण पानी भर गया था और कांताने उस पानीको निकालनेके लिए 'सीवर' खोल दिया; परन्तु वे उस स्थानपर ७ घण्टे खडी
रहीं ! उन्होंने वाहनोंको किसी भी दुर्घटनासे बचानेके लिए उन्हें हाथसे सङ्केत करके दूसरी ओरसे जानेको कहा। कांताने कहा, "मैंने पानी निकालनेके लिए 'सीवर'का ढक्कन खोला और वहां लोगोंको चेतावनी देनेके लिए खडी भी रही; परन्तु 'बीएमसी' अधिकारी कुछ समय पश्चात आए और मुझे इसके लिए अपशब्द कहे।"

अपनी असफलता छुपानेके लिए महिलाको अपशब्द कहनेवाले ऐसे अधिकारियोंके कारण ही आज भारत देश भ्रष्ट कहलाता है और अच्छे लोग भी आगे नहीं आते हैं। ऐसे अधिकारी दण्डके पात्र हैं; परन्तु यह एक वृक्षकी भांति हो गया है, जहां मूलतक भ्रष्टाचार फैला है; अतः अब व्यवस्था परिवर्तनकी आवश्यकता है।

****

उत्तर प्रदेशमें 'सपा-बसपा' लगे ब्राह्मणोंको लुभानेमें

उत्तर प्रदेशमें अब राजनीतिकी धुरी पुनः ब्राह्मणोंपर ही आकर टिक गई है। राज्यके दोनों स्थानीय दल 'सपा और बसपा' ब्राह्मणोंको लुभानेके लिए एकसे बढकर एक आश्वासन दे रहे हैं।

'सपा'ने कहा है कि वे भगवान परशुरामकी १०८ फुट ऊंची मूर्तिका निर्माण करवाएगी। इसके

लिए स्थान ढूंढनेकी बात भी कही जा रही है । बताया गया है कि मूर्ति बनवानेके लिए समाजवादी पार्टी देशके लोकप्रिय मूर्तिकार अर्जुन प्रजापति और लखनऊ स्थित मुख्यमन्त्री कार्यालयमें लगी पूर्व प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयीकी भव्य प्रतिमा बनानेवाले राजकुमारके सम्पर्कमें है । 'सपा' प्रत्येक जनपदमें भगवान परशुरामकी मूर्ति लगवाने और ब्राह्मण सम्मेलन आयोजित करानेकी योजना बना रही है । इसके अतिरिक्त स्वतन्त्रता संग्रामके सेनानी मंगल पांडेयकी प्रतिमा लगानेपर विचार किया जा रहा है । अखिलेश यादवने कई ब्राह्मण नेताओंके साथ बैठक की है । दल निर्धन ब्राह्मण घरकी बेटियोंका विवाह भी कराएगा । बहुजन समाज पार्टीकी मुखिया मायावतीने तो यहांतक कहा कि वो 'सपा'से भी ऊंची परशुरामकी प्रतिमा लगवाएंगी । उन्होंने भगवान परशुरामके नामपर चिकित्सालय बनवानेसे लेकर साधु-सन्तोंके ठहरनेके लिए स्थल बनानेकी बात कही । उन्होंने कहा कि ब्राह्मण समाजको 'बसपा'ने प्रतिनिधित्व दिया है और ब्राह्मणोंका 'बसपा'पर पूर्ण विश्वास है ।

सभी हिन्दू अब जानते हैं कि सपा या बसपा भगवान परशुरामकी प्रतिमा चुनावमें विजयी होनेके लिए बनवाने की बात कर रहे हैं; किन्तु न केवल ब्राह्मणोंको, अपितु सभी हिन्दुओंको इस विचारका ही विरोध करना चाहिए । भगवान परशुराम, भगवान विष्णुके अवतार हैं और भगवानकी मूर्ति मार्गोंपर नहीं, मन्दिर में प्राण प्रतिष्ठित की जाती है और उनका पूजन विधिपूर्वक किया जाता है । भगवान परशुराम कोई महापुरुष नहीं हैं कि उन्हें 'चौराहों'पर खडा कर दिया जाए !

****

मस्जिदके अवैध निर्माणके विरुद्ध याचिका डालनेवाले अधिवक्तापर जिहादियोंने किया गोलीचालन

उत्तर प्रदेशके प्रयागराजमें रविवार, ९ अगस्तको जिहादी गुण्डोंने इलाहाबाद उच्च न्यायालयके अधिवक्ता (वकील) अभिषेक शुक्लपर गोलीचालन किया । वे इसमें बच गए । इस आक्रमणमें कुख्यात 'अतीक अहमद गैंग'का हाथ होनेका प्रतिवाद (दावा) किया जा रहा है । उनके साथ मारपीट और लूटपाट भी की गई । चोटिल अवस्थामें उन्हें 'एसआरएन' चिकिसालयमें प्रविष्ट करवाया गया ।

हिन्दू विधिज्ञ परिषदकी ओरसे दिए 'प्रेस विज्ञप्ति'में कहा गया है कि अभिषेकके हाथ और पांवमें ३ गोलियां लगी हैं । इसमें कहा गया है कि अधिवक्ता अभिषेक शुक्लने इलाहाबाद उच्च न्यायालय परिसरमें अवैध मस्जिद बनाए जानेके विरुद्ध याचिका प्रविष्ट की थी, जो अभी उच्चतम न्यायालयमें लम्बित है । इसे लेकर भी अभिषेक शुक्ल जिहादियोंके लक्ष्यपर थे और इसी कारण उनपर आक्रमण किया गया है ।

अवैध मस्जिद बनाकर आतङ्कवाद करेंगे और कोई रोकेगा तो उसे गोली मारेंगे, जिहादियोंका यह विचार इसीलिए है; क्योंकि आज हिन्दू एक नहीं है और यह अत्यन्त लज्जाका विषय है !

वैदिक उपासना पीठद्वारा कुछ आवश्यक सूचनाएं

१. यदि आप अपने राष्ट्र और धर्मसे सम्बन्धित प्रेरक लेखोंको, जो आपने स्वयं लिखे या संकलित किए हों तो उन्हें आप हमें हमारे नीचे दिए सम्पर्क सूत्रपर, अपना नाम और आप क्या करते हैं ?, यह लिखकर भेज भेज सकते हैं । यदि प्रकाशनयोग्य होगा तो हम उसे अवश्य अपने दैनिक एवं मासिकमें छापेंगे ! कृपया कहींसे 'कॉपी-पेस्ट'कर हमें न भेजें !

२. वैदिक उपासना पीठके इन्दौर आश्रममें रहकर यदि कोई थोडे समयके लिए या पूर्ण समय साधना करने हेतु इच्छुक हैं तो हमें अवश्य सम्पर्क कर सकते हैं। इस हेतु आपमें ईश्वरप्राप्तिकी उत्कण्ठाका होना अति आवश्यक है ! साथ ही वैदिक उपासना पीठके माध्यमसे जो भी जिज्ञासु या साधक , साधना करने हेतु इच्छुक हैं; किन्तु उनके लिए आश्रममें आकर साधना करना सम्भव नहीं है तो वे हमारे whatsapp गुट 'साधना'से जुड सकते हैं। इसमें आपको अपनी व्यष्टि साधनासे सम्बन्धी प्रश्न, अडचनें एवं साधनाके चरणोंके प्रवासके विषयमें मार्गदर्शन किया जाएगा। इस हेतु मुझे 'साधना' गुटमें जोडें, इस सन्देशके साथ अपना नाम और आप कहां रहते हैं ? (अपने जनपदका अर्थात डिस्ट्रिक्टका नाम) यह नीचेके सम्पर्क क्रमांकमें 'व्हाट्सऐप्प'पर लिखकर भेजें ! इसके माध्यमसे आप घरमें रहकर अपनी साधना कर सकते हैं।

३. यदि आप धर्म और अध्यात्मकी शिक्षा देनेवाले प्रतिदिनके लघु लेख पढना चाहते हैं एवं धर्मधारा श्रव्य सत्संग सुनने हेतु इच्छुक हैं तो आप हमारे 'जाग्रत भव' गुटके सदस्य बनकर घर बैठे धर्म और अध्यात्मकी जानकारी प्राप्तकर अपने जीवनको दिशा दे सकते हैं। इस हेतु हमें 'जागृत भव' गुटमें जोडें, यह सन्देश ९७१७४९२५२३ (9717492523) / ९९९९६७०९१५ (9999670915) / ९७१७४९२५९९ (9717492599) में लिखकर भेज सकते हैं।

४. जो भी व्यक्ति वैदिक उपासना पीठके तत्त्वावधानमें अग्निहोत्र सीखना चाहते हैं वे ९९९९६७०९१५ के व्हाट्सऐप्पपर अपना सन्देश इसप्रकार भेजें, 'हमें कृपया अग्निहोत्र गुटमें सम्मिलित करें।'

५. कोरोना जैसे संक्रामक रोग एवं भविष्यकी आपातकालकी तीव्रताको ध्यानमें रखते हुए वैदिक उपासना पीठद्वारा संक्षिप्त दैनिक हवन कैसे कर सकते हैं ?, इस विषयमें १५ अगस्तसे एक नूतन उपक्रम आरम्भ किया जा रहा है। इसमें अग्निहोत्र समान इसे सूर्योदय या सूर्यास्तके समय ही करनेकी मर्यादा नहीं होगी, इसे आप एक समय या सप्ताहमें जितनी बार चाहे, कर सकते हैं। यदि आप सीखना चाहते हैं तो ९९९९६७०९१५ पर हमें इस प्रकार सन्देश भेजें, "हम दैनिक हवनकी सरल विधि सीखना चाहते हैं, कृपया हमें यथोचित गुटमें जोडें।"

प्रकाशक : Vedic Upasana Peeth
जालस्थल : www.vedicupasanapeeth.org
ईमेल : upasanawsp@gmail.com
सम्पर्क : + 91 9717492523 / 9999670915